RESEARCH PAPER | Geography | Volume : 4 | Issue : 6 | June 2014 | ISSN - 2249-555X

ठोस अपषिष्ट प्रदूषणः अम्बाह नगर (म0प्र0) के विषेष सन्दर्भ म
Solid Waste Pollution: With special Reference to Ambah City (M.P.)

KEYWORDS

Dr. Nilesh Kumar Sakhwar

Assistant Professor(Guest Lecturer-Geography)Govt. Maharaja Autonomous College Chhatarpur,(m.p.)

ABSTRACT वर्तमान समय में जल, वायु, मृदा एवं ध्वनि प्रदूषण के साथ–साथ ठोस अपषिष्ट प्रदूषण की समस्या नगरों में तेजी से बढ़ती जा रही है। सामान्यतः यह समस्या आधुनिक समृद्ध भौतिकवादी समाज की देन है। प्रयोग करो और फैकों संस्कृति *(Use And Throgh Culture)* ठोस अपषिष्ट प्रदूषण की विकट समस्या के लिए जिम्मेदार है। यह समस्या किसी एक क्षेत्र, प्रदेष की नही है बल्कि सम्पूर्ण विष्व की एक ज्वलंत समस्या बनकर उभर रही है इस समस्या के निदान के लिए सम्पूर्ण मानव जाति को आगे लाने का प्रयास षिक्षाविदों द्वारा किया जाना चाहिए। इस हेतु पर्यावरणीय षिक्षा जागरूकता एवं जनचेतना एक उचित माध्यम हो सकता है।

वर्तमान समय में जल, वायु, मृदा एवं ध्वनि प्रदूशण के साथ–साथ ठोस अपषिश्ट प्रदूशण की समस्या नगरों में तेजी से बढ़ती जा रही है। ठोस अपषिश्ट प्रदूशण की समस्या अम्बाह नगर (म0प्र0) में ही नहीं बल्कि भारत सहित विष्वभर के नगरों में तेजी से बढ़ रही है। ठोस अपषिश्ट प्रदूशण से न केवल मनुश्य जीवन मुष्किल में है परन्तु इसका सामान्य प्रभाव पषु–पक्षी तथा वनस्पति पर भी पड़ता है। यदि समय रहते इस पर्यावरण ीय समस्या के रोकथाम के लिए निदानात्मक उपाय नही सोचे तो यह समस्या मानव के निवासित क्षेत्रों को अपनी चपेट में ले लेगी। चाहे वे नगरीय क्षेत्र हों या फिर ग्रामीण क्षेत्र। और इस पर्यावरण प्रदूशण जनित समस्या से मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा उत्पन्न होता जा रहा है। जिसके गम्भीर परिणाम उभरकर सामने आ रहे हैं वास्तव में ठोस अपषिश्ट प्रदूशण आधुनिक समृद्ध भौतिकवादी समाज की देन है जिसका प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष प्रभाव सम्पूर्ण जैव जगत पर पड़ रहा है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के कूढ़ा–करकट जैसे– पॉलीथिन, प्लास्टिक वोतलें एंव डिब्बे, चमड़ा, धातुओं एवं कांच के टुकड़े, सड़े गले फल–सब्जियॉ एवं इनके छिलके और इलेक्टोनिक अनुउपयोगी पार्टस, रददी कागज आदि) अर्थात हम कह सकते हैं कि प्रयोग करो और फैकों संस्कृति ठोस अपषिश्ट प्रदूशण की विकट समस्या के लिए जिम्मेदार है।

अध्ययन क्षेत्र

ज्यामितीय स्थिति के अनुसार यह नगर म0प्र0 राज्य के उत्तर (स्थित–जिला–मुरैना से 35 कि0मी0 दूर)में 26 30′ उत्तरी अक्षांस तथा 78 06′ पूर्वी देषान्तर से 78 42′ पूर्वी देषान्तर के मध्य स्थित है। जिसकी समुन्द्र तल से उॅचाई 150–300 मीटर है। कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 361 वर्ग किलोमीटर एवं कुल जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 36443 है। इस नगर से वडफरा–वरेह गॉव, पाय का पुरा, दोहरी–दौहरा, भरतपुरा, लक्ष्मणपुरा रूँद का पुरा लेन का पुरा पूठ एवं तोर, गुलाव पुरा–नावली गॉव प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। अम्बाह नगर पालिका की सीमा के अन्तर्गत कुल 18 वार्ड आते हैं। व्यक्तिगत सर्वेक्षण, दृष्याअवलोकन के आधार पर महसूस किया गया है कि यह नगर अनेकानेक वातावरणीय समस्याओं से घिरा हुआ इसलिए मैनें ''ठोस अपषिश्ट प्रदूशणः अम्बाह नगर (म0प्र0) के विषेश सन्दर्भ में'' एक भौगोलिक अध्ययन षोध पत्र का विशय चुना है क्योंकि यह नगर विकास की और अग्रसर है। और इस नगर में ठोस अपषिश्ट प्रदूशण की समस्या अन्य सभी प्रकार के प्रदूशणों की अपेक्षा अधिक देखने को मिलती हैं

उददेष्य

मेरा यह षोध लेख अम्बाह नगर (म0प्र0) में विभिन्न प्रकार के प्रदूशण विषेशकर ठोस अपषिश्टों से जनित समस्याओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है नगर में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के ठोस अपषिश्ट पदार्थो की जानकारी प्राप्त कर एवं इनसे मानव जीवन पर पडने वाले प्रतिकूल प्रभावों का अध्ययन कर नियत्रण हेतु आवष्यक सुझाव एवं प्रबन्धन की रूपरेखा निर्मित कराना ही इस षोध पत्र का प्रमुख उददेष्य हैं।

अम्बाह नगर में पर्यावरणीय समस्याओं का विवरण

1. वाईपास रोड, अम्बाह–भिण्ड रोड़, अम्बाह–मुरैना रोड़ एवं अम्बाह–अटेर रोड़ पर ध वनि एवं वायु प्रदूशण स्पस्ट रूप से देखने को मिलता है।
2. गुरूद्वारा मोहल्ला, सब्जी मंडी रोड़, पुरानी वस्ती भुमियॉ एवं किला रोड़ वाली गली में नालियों एवं गढढों में जलभराव की समस्या होने से वहॉ जल प्रदूशण और ठोस अपषिश्ट प्रदूशण की भयावह समस्या देखने को मिलती है।
3. हरिजन वस्ती–गुरूद्वारा मोहल्ला एवं पुरानी वस्ती, जग्गा चौराहा एवं पोरसा चौराह एवं मुरैना चौराहा पर षहर के अन्य भागों की अपेक्षा सामाजिक प्रदूशण की समस्या अधिक पायी जाती है।
4. नगर में ठोस अपषिश्टो का जमावाड़ा नगर के प्रमुख जल निकास स्त्रोत–नाले, नालियों एवं तालावों में, चौराहों एवं गलियों के नुक्कड़ पर तथा सब्जी मंण्डी, गल्ला मंण्डी,

एन0सी0सी0 ग्राउण्ड के आसपास, वाईपास रोड के दोनों ओर पाया जाता हैं

उपरोक्त विवरण से स्पस्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के हर वार्ड एवं क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वातावरणीय समस्या प्रत्यक्षतः देखेने को मिलती है जो नगर के विकास को अवरूद्ध कर रही है।

अपषिश्ट पदार्थ, फैलने के कारण एवं प्रभाव

नगर के निवासी अपने घरों/व्यावसायिक फर्मो एवं दुकानों से निकलने वाली त्याज्य सामग्री अर्थात कचरे को सड़क के किनारे पर, खाली पड़ी भूमि पर, भवनों के कोनों में, सीधे सड़क पर एवं चहारदीवारों के पीछे अज्ञानतावष एवं लापरवाही के कारण आदि स्थानों पर फैंकते हैं और यह कचरा हवा से उड़कर घरो–गलियों, सड़कों पर, नाले एवं नालियों में भर जाता है। इसके अलावा घुमन्तु जानवर(सूअर, कुत्ते, गाय) और कबाडा एकत्रित करने वाले निर्धन लोग इन पदार्थो को इधर–उधर विखेर देते हैं जो अन्त में यही अपषिश्ट पदार्थ बड़े पैमाने पर एक विषेश प्रकार के घातक प्रदूशण का कारण बन जाता है। और जिसके कारण नगर निवासी अनेक प्रकार की समस्याओं गन्दगी, दुर्गन्ध, जल एवं वायु प्रदूशण एवं मृदा प्रदूशण सहित अनेक प्रकार के रोगो से भी ग्रसित जैसे– चर्म रोग, एलर्जी, पेट एवं श्वांस सम्बन्धी रोग, हैजा टाईफाइड, मलेरिया, खॉसी, झुकाम, ऑख, नाक, गले की बीमारी इत्यादि हो जाती हैं जो ठोस अपषिश्ट प्रदूशण का ही परिणाम है।

नगर पालिका द्वारा कचरे के निपटान की वस्तु स्थिति

नगर पालिका के पास आज भी कचरे के निपटान की कोई ठोस उचित व्यवस्था नही है क्योंकि जो ठोस अपषिश्ट पदार्थ नगर से निकलता है उस कचरे को सफाई कर्मचारी इक्कटठा कर नगर के निचले भागों में या जल भराव वाले स्थानों में एवं नगर के बहार सडक के दोनो और डम्प कर देते हैं अर्थात इन अपषिश्ट पदार्थो को किसी एक निष्चित स्थान पर न डालकर कहीं भी डाल दिया जाता है जो घातक स्थिति का कारण बनता है क्योंकि डम्प किये गए अपषिश्टों के अपघटन के कारण घातक एवं विषैले रोगाणुओं की उत्पत्ति एवं वृद्धि होती है नगर के ये क्षेत्र ठोस अपषिश्ट प्रदूशण के साथ–साथ जल एवं वायु, मृदा प्रदूशण का केन्द्र बन जाते हैं

ठोस अपषिश्टो का निपटान सम्बन्धी सुझाव

1. सबसे पहले कचरे को री–साईकिलिंग योग्य एवं री–साईकिलिंग अयोग्य कचरे के रूप में विभक्त कर देना चाहिए अर्थात जो कचरा री–साईकिलिंग के योग्य है उसका पुनः उपयोग किया जाना चाहिए।
2. जैविक कचरे को नियोजित ढंग से जैविक खाद के रूप में रूपान्तरित कर कृशि कार्यो में उपयोग किया जाना चाहिए।
3. विभिन्न स्त्रोतो से निकलने वाले कचरे को एक नियत स्थान पर डलवाने के लिए कहा जाऐ एवं ठोस अपषिश्टों का तत्काल निपटान किया जाना चाहिए।

ठोस अपषिश्ट प्रदूशण का नियन्त्रण

1. नगर को ठोस अपषिश्ट प्रदूशण को बचाने के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए (क्योकि ठोस अपषिश्ट प्रदूशण के निपटान एवं नियत्रण में 90 प्रतिषत भूमिका नगर वासियों की होती है) अर्थात समाज के सभी वर्गो में ठोस अपषिश्ट प्रदूशण से उत्पन्न घातक परिणामों का प्रचार कर उनमें पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा की जानी चाहिए।
2. नगर में पॉलीथिन पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।
3. नगरपालिका प्रषासन को फल/चाट एवं अंडा एवं फल विक्रेताओं के प्रति कड़ाई का व्यवहार करना चाहिए ताकि वे उनके द्वारा त्याज्य अपषिश्टों को कचरादानों में ही एकत्रित कर उसका आवष्यक रूप से निपटान करें। ऐसा न करने पर उन्हें दण्डित करें।
4. नगर के प्रत्येक नुक्कड–चौराहे एवं गलियों में आवष्यकतानुसार कचरादान/कूढ़ादान रखे जाने चाहिए।
5. पर्यावरण प्रदूशण नियत्रण अधिनियम का कड़ाई से पालन सुनिष्चित किया जाए।

षोध पत्र से प्राप्त निश्कर्शो से ज्ञात होता है कि यहॉ के निवासियों में अपषिश्ट पदार्थो से होने वाले दुश्प्रभावों का ज्ञान नही है अतः उन्हे ठोस अपषिश्ट प्रदूशण के कारणों, दुश्प्रभावों तथा रोकथाम की विधियों के बारे में जागरूक किया जाए, तब ही हम स्वच्छ नगर की कल्पना कर सकते है प्रस्तुत षोध पत्र पूर्ण करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीय तथ्य एवं जिला सांख्यिकी पुस्तिका, मुरैना का प्रयोग किया गया है। षोध पत्र आनुभाविक, व्यक्तिगत सर्वेक्षण षोध पद्वति पर आधारित है।

Volume : 4 | Issue : 6 | June 2014 | ISSN - 2249-555X

REFERENCE

1. सिंह, सविन्द्र 2000 पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद 2. अवस्थी नरेन्द मोहन 2005 संसाधन और पर्यावरण, आदर्ष प्रिन्टर्ष एवं पब्लिकेषन भोपाल 3. सखवार, एन0 के0 2011 अधर चम्बल एवं कुंआरी वेसिन (म0प्र0) में नगरीय पर्यावरण प्रदूषण–कारण, प्रभाव एवं नियत्रण–मुरैना नगर के विषेष सन्दर्भ में एक भौगोलिक विष्लेषण, अप्रकाषित पी.एच. डी. थीसिस, जीवाजी वि0वि0 ग्वालियर 4. पर्यावरण चेतना म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल पृष्ठ क्र0 209 5. चर्मण्वती भूगोल शोध पत्रिका 2012 अम्बाह पी.जी. कॉलेज अम्बाह, मुरैना म0प्र0 6. जोषी ओ0पी0 घरेलू प्रदूषण, कैरियर विज्ञान पत्रिका नई दिल्ली, 7. सक्सेना एन.एम. 2006 पर्यावरण अध्ययन, साहित्य भवन, आगरा 8.रघुवंषी, अरूण एवं रघुवंषी,चंद्रलेखा1990 पर्यावरण एवं प्रदूषण 9. ठोस अपषिष्ट प्रदूषण–कारण,प्रभाव, नियत्रण एवं प्रबन्धन मुरैना नगर के विषेष सन्दर्भ में एक शोध पत्र डॉ0 के0 एस0 सेंगर, डॉ0 आरिफ सिद्दीकी, डॉ0 निहारिका सेंगर